International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2022, Submitted in December 2022, iajesm2014@gmail.com

परावर्ती प्रचलन, शिक्षक शिक्षा का केन्द्रीय लक्ष्य : अभिभावकों की सहभागिता

Jaipal Arya, Research Scholar, Department of Education, Glocal University, Mirzapur, Saharanpur (U.P.)
Dr. Vikesh Kamra, Professor, Department of Education, Glocal University, Mirzapur, Saharanpur (U.P.)

प्रस्तावना

''प्राथमिक स्कूलों का शिक्षक–शिक्षार्थी अनुपात 1:41 है। इस समय देश में 57 लाख शिक्षक है। यह संख्या अमेरिका और चीन के अध्यापकों से ज्यादा है। इसके साथ एक विडम्बना यह जुड़ी है कि इनमे से 25 प्रतिशत शिक्षक अपनी ड्यूटी से गायब रहते है। 19 प्रतिशत भारतीय प्राथमिक स्कूलों में सिर्फ एक शिक्षक है। सन् 2004 में 30 प्रतिशत स्कूलों के पास पक्के भवन नहीं थे।''9 अगर हम आजादी से पहले की बात करे तो स्वतन्त्रता से पूर्व वर्तमान राजस्थान राज्य का क्षेत्र अनेक देशी रियासतों में विभक्त था तथा राज्य का कुछ ब्रिटिश भारत का अंग था, अतः स्वाधीनता पूर्व भाग की सामन्ती व्यवस्था में देशी रियासतों में इसका स्वरूप अत्यन्त पिछड़ा एवं सोचनीय था; क्योंकि राजस्थान प्रदेश पश्चिमोत्तर दिशा में आने वाले आक्रमणकारियों जैसे यूनानी, कुषाण, हूण, अरब, तुर्क आदि के आक्रमणों से रक्षा करने में सदैव प्रहरी की भूमिका निभाता रहा जिससे इसका जनजीवन और शिक्षा व्यवस्था विशृंखलित व अव्यवस्थित बनी रही तथा शिक्षा सर्वसाधारण के लिए सुलभ न होकर एक निश्चित वर्ग तक ही सीमित रह गई। उस समय शिक्षा विभाग जैसा व्यवस्थित कोई विभाग न था। शिक्षा की संरक्षण उन दिनों के अनेक दानी और विद्याप्रेमी जनो से मिलती है। इसके बाद अंग्रेजों से देशी राज्यों की संधियाँ होने के बाद शिक्षा का आधुनिकीकरण आरम्भ हुआ।

परावर्ती प्रचलन, शिक्षक शिक्षा का केन्द्रीय लक्ष्य :

उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के इस दौर में शिक्षा आम गरीब लोगों की पहुंच से बाहर होती जा रही है। बजट में अपर्याप्त प्रावधानों के चलते सरकारी शिक्षा संस्थानों की हालत बेहतर नहीं हो पा रही है। हाल ही के वर्षों में दो प्रकार की प्रणालियां समानान्तर चलती रही है – एक अत्यन्त न्यून फीस वाले सरकारी शिक्षण संस्थान तो दूसरे भारी फीस वाले निजी शिक्षण संस्थान। परिणामस्वरूप शिक्षा में एक आश्चर्यजनक असमानता देखने को मिल रही है जिसे समान लाने के लिए सरकार प्राथमिक शिक्षा को छोड़कर शेष सभी स्तर की शिक्षा व्यवस्था में सार्वजनिक–निजी साझेदारी मॉडल को लागू कर रही है जिसे पीपीपी मॉडल के नाम से जाना जाता है।

सार्वजनिक–निजी साझेदारी मॉडल का तात्पर्य है कि एक शिक्षण संस्थान जो इस स्थिति खुलेंगे, यह न्युनतम लाभ के उद्देश्य से एक साथ कार्य करेंगे। पीपीपी मॉडल की नीति बनाने वाले निर्माताओं द्वारा यह कहा जा रहा है कि इस प्रकार के शिक्षण संस्थान ज्यादा कुशल होंगे और इससे शिक्षा की लागत कम होगी।

साहित्य का अध्ययन

वंदना (2005) वरिष्ठ सहायक विद्यालयों की शैक्षिक सूचनात्मक उपलब्धि पर ध्यान केन्द्रित करते हुए यह पाया गया कि प्रधानाध्यापकों, शिक्षकों आदि का संगठन, उनकी शैक्षिक सीमा छात्रों की व्यावहारिक उपलब्धि को अत्यधिक प्रभावित करती है।

संपूर्ण सिंह (2005) स्कूल पर्यावरण संगठन पर ध्यान केंद्रित किया, मौलिक और सहायक स्कूलों के नींव प्रमुखों की नेतृत्व और नैतिक प्रगति की और पाया कि ग्रेड प्रशिक्षकों के शिक्षकों पर भावनाएं और डेटा विवेकाधीन प्रशिक्षकों की तुलना में अधिक हैं। दोनों तरह के स्कूलों के शिक्षकों के अभिनय के प्रति दृ ष्टिकोण को समान देखा गया।

आर. का। सैंडिल्या (2008) राजस्थान के सहायक स्तर पर विद्यालयों के शैक्षणिक वातावरण पर ध्यान केन्द्रित किया और पाया कि प्रशिक्षकों को अपने छात्रों को संयोग से विद्वतापूर्ण और कुशल पाठ्यक्रम और दिशा प्रदान करनी चाहिए। छात्र के व्यावहारिक प्रगति के आसपास केन्द्रित करें। लकी एजुकेशनल मेथडोलॉजी बनानी चाहिए। छात्रों को विद्वानों के साथ–साथ सह–शिक्षाप्रद गतिविधियों के लिए सीमित करें। तैयारी में यशपाल, गांगुली, श्रीमाली, कोठारी, मुदलियार, नियामक आयोग की सिफारिशों को अमल में लाना तय है। विद्यालय में उपयुक्त वास्तविक साधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए।

टी. सी. ज्ञानी (2008) योजना समय अवधि के दौरान प्रशिक्षकों की शैक्षिक उपलब्धि पर होमरूम वातावरण, शिक्षक संगठन प्रत्यक्ष और शिक्षक के उद्देश्यों के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया और पाया कि समीक्षा गलियारे का वातावरण बाहर और बाहर छात्रों की व्यावहारिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। शिक्षकों के अभिनय के लिए उपयोगी ड्राइव दृष्टिकोण छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित करता है। शिक्षक की इच्छाएँ छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों में वर्गीकरण करने में एक बुनियादी भाग की अपेक्षा करती हैं। शिक्षक चाहे आश्वस्त हो या अनुपयुक्त, छात्रों की इच्छाएँ उनकी स्कूल की उपलब्धियों को चुनने में एक बड़ी भूमिका की अपेक्षा करती हैं।

एस कृष्णन (2009) उत्तरोत्तर उच्च विवेकाधीन विद्यालयों के प्रगतिशील वातावरण पर ध्यान केंद्रित किया

और पाया कि विभिन्न सीमाओं वाले स्कूलों में काम करने वाले शिक्षक वैध वातावरण के विपरीत हैं।

आकलन एवं मूल्यांकन में अंतर :

आकलन कक्षा प्रक्रिया में सीखने–सिखाने के दौरान निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, यह मूल्यांकन प्रक्रिया का ही भाग है। यह बच्चे को नित्यप्रति के सीखने एवं जानने का प्रयास करता एक संवादात्मक तथा रचनात्मक प्रक्रिया का नाम है, जिसके द्वारा शिक्षक को यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थी का उचित अधिगम हो रहा है अथवा इसका उद्देश्य निदानात्मक होता है इस कारण वह बच्चों को निरन्तर सुधार के अवसर प्रदान करता हुआ उसके ज्ञान के निर्माण को स्थायी करता है। मूल्यांकन एक योगात्मक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी पूर्व निर्मित शैक्षिक उपलब्धि का ज्ञान किया जाता है। इसका उद्देश्य इसका मूल्य निर्णयन करना होता है। शैक्षिक संदर्भ में इसका उद्देश्य निर्धारित पाठ्यक्रम की समाप्ति पर विद्यार्थियों द्वारा अर्जित की गई उपलब्धि के आधार पर मूल्य निर्णयन करना है।

अभ्यास एवं आकलन पत्रक :

कक्षा शिक्षण के दौरान अभ्यास और आकलन पत्रक का महत्त्वपूर्ण स्थान है। किसी प्रत्यय को सिखाने के पश्चात बच्चे ने उसके प्रति अपनी किसी समझ बनाई है इसलिए शिक्षक को अभ्यास पत्रक तैयार करने चाहिए। इन अभ्यास पत्रकों के उस प्रत्यय के प्रति समझ बनाने में जिस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता अनुभव की जाती है, उसे अभ्यास पत्रक में सम्मिलित किया जाए। इसी प्रकार किसी प्रत्यय अथवा युनिट के पूर्ण होने के पश्चात शिक्षक को एक समग्र आकलन कार्यपत्रक का निर्माण करना चाहिए। इस कार्यपत्रक के निर्माण में ध्यान रहे कि प्रश्नों के प्रकार में व्यापकता हो, विविधता हो तथाप्रश्न अधिगम उद्देश्यों से अन्तर्ग्रन्थित हो।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- शिक्षकों और अभिभावकों के बीच संवाद और सहयोग को बढ़ावा देने के तरीकों की पहचान करना।
- विद्यार्थियों के शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास में अभिभावकों की सहभागिता की महत्ता को समझना।
- अभिभावकों की सहभागिता के माध्यम से विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देने के तरीकों की खोज करना

शोध परिकल्पना

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास में अभिभावकों की सहभागिता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- अभिभावकों की सहभागिता उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक और भावनात्मक विकास को बढ़ावा देती है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के शिक्षकों और अभिभावकों के बीच संवाद और सहयोग के स्तर में वृद्धि शैक्षिक परिणामों में सुधार के साथ जुड़ा होता है।

शोध सांख्यिकी एवं आयाम

उपयुक्त रीति का चयन

समंकों के संग्रहण की सभी रीतियां अपनी दृष्टि से उपयुक्त हैं। प्रत्येक रीति के अपने गुण व दोष हैं। अतः सर्वश्रेष्ठ रीति का चयन करना जटिल कार्य है। कहीं पर एक रीति उपयुक्त हो सकती है, जबकि दूसरी समस्या के अध्ययन के लिए अन्य रीति उपयुक्त हो सकती है।

डॉ. बाउले के अनुसार, ''संकलन तथा सारणीयन में सामान्य ज्ञान प्रमुख आवश्यकता तथा अनुभव प्राप्त शिक्षक होते हैं। अतः यह बतलाना कि सभी परिस्थितियों में कौन–सी रीति उपयुक्त है, अत्यन्त कठिन है क्योंकि जांच की आवश्यकतानुसार उपयुक्त रीति का चयन करना पड़ता है।'' प्रायः उपयुक्त रीति का चुनाव करते समय निम्नांकित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. **अनुसंधान की प्रकृति :** समंक संग्रहण के लिए किस रीति को काम में लाया जावे, यह अनुसंधान की प्रकृति पर अत्यधिक निर्भर करता है। यदि अनुसंधान की प्रकृति ऐसी है जिसमें सूचना देने वालों से प्रत्यक्ष सम्पर्क रखना आवश्यक है, जैसे निरक्षर व अशिक्षित किसानों के रहन–सहन की स्थिति का अध्ययन करना हो तो प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसंधान आवश्यक है। यदि क्षेत्र के विस्तृत होने से या अन्य किसी कारण से प्रत्यक्ष व्यक्तिगत सम्पर्क सम्भव या आवश्यक न हो तो अप्रत्यक्ष मौखिक अनुसंधान अपेक्षित है। यदि सूचकों से लिखित रूप से सूचना प्राप्त करनी हो तथा सूचक शिक्षित हों तो उनसे प्रश्नावली भरवाकर डाक द्वारा प्राप्त करना अपेक्षित है। यदि कुछ सूचक अशिक्षित हैं उदाहरण के लिए जनगणना करनी हो तो प्रगणकों की सहायता लेना आवश्यक है।

2. **उद्देश्य एवं क्षेत्र :** यदि जांच के सीमित क्षेत्र में अनेक विषयों पर सूचना एडी फत करनी हो तो प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुसंधान उपयुक्त हैं

3. उपलब्ध आर्थिक साधन : अनुसंधानकर्ता के उपलब्ध वित्तीय साधनों पर निर्भर करता है कि किस रीति

को अपनाया जावे।

4. **शुद्धता का स्तर :** जितनी शुद्धता की मात्रा वांछनीय समझी जाए उसी के अनुसार संकलन रीति का चुनाव करना आवश्यक है। विस्तृत क्षेत्र में अत्यधिक शुद्धता क्रमशः प्रगणकों के द्वारा अनुसूचियां भरवाकर प्राप्त की जा सकती है। अप्रत्यक्ष अनुसंधान में अधिक शुद्धता प्राप्त नहीं की जा सकती है।

5. **उपलब्ध समय :** अनुसंधान के लिए उपलब्ध समय भी अनुसंधान की रीति के चुनाव को प्रभावित करता है। यदि सूचनाएं कम समय में प्राप्त करनी हैं तो संवाददाताओं से प्रश्नावलियां भरवाकर सूचना प्राप्त की जा सकती हैं, जबकि पर्याप्त समय होने पर व्यक्तिगत अनुसंधान या प्रगणकों के माध्यम से सूचना संग्रहित की जा सकती हैं।

शैक्षिक आयाम

माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक स्थिति को मजबूत करने के लिए प्राथमिक आवश्यकता योजना निर्माण की है जो कि संस्था की आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के संदर्भ में सहयोगी अध्यापकों/कर्मचारियों/शिक्षार्थियों एवं अभिभावकों से विचार–विमर्श एवं वस्तुस्थिति का अध्ययन के उपरान्त योजना का निर्माण किया जाए। योजना व्यावहारिक एवं उद्देश्य आधारित हो। योजना में प्रभारी सहयोगी शिक्षकों, कर्मचारियों के दायित्व भार का उल्लेख हो; योजना की उपलब्धियों का सामयिक व सत्रान्त में मूल्यांकन हो ताकि प्राप्त अनुभवों एवं उपलब्धियों के सन्दर्भ में अगले वर्ष की योजना निर्माण में सहायता मिल सके।

विद्यालय को शैक्षिक दृष्टिकोण से प्रभावी बनाने हेतु आवश्यक है कि विद्यालय में कार्यरत सभी स्टाफ का सर्वहिताय ध्येय होना चाहिए कि अध्ययन में बालक को अच्छी सुविधा उपलब्ध हो जिससे विद्यालय अच्छी प्रगति कर सके। अध्ययन–अध्यापन के दौरान शिक्षण की आवश्यकतानुरूप शिक्षण प्रविधि, विधि, सूत्र, सहायक सामग्री एवं आवश्यक निर्देश दिया जाए। प्रधानाध्यापक प्रभावी नेतृत्व की क्षमता वाला हो जिससे शिक्षक, शिक्षार्थी, अभिभावक एवं समुदाय का नेतृत्व कर सके। यह स्पष्टवादी एवं साहसी हो। विद्यालय के कार्यक्रमों को लागू करके उनकी क्रियान्विती सुनिश्चित की जावे।

शिक्षण सूत्र

कक्षा में वैयक्तिक विभिन्नता वाले बालक होते है और सभी बालकों की बुद्धिलब्धि एक जैसी नहीं होती इस कारण प्रत्येक विषय वस्तु को विद्यार्थियों द्वारा सरलतापूर्वक समझ लेना असंभव सा लगने लगता है जिसे संभव बनाने के लिए एक योग्य, प्रशिक्षित और अनुभवी शिक्षक जिन सूत्रों को काम मे लेता है उन्हे शिक्षण सूत्र कहते है। शिक्षक इन शिक्षण सूत्रों का उपयोग करते हुए विषयवस्तु को सरल एवं बोधगम्य बनाता है। ये शिक्षण सूत्र निम्नलिखित है–

1. प्रत्यक्ष से परोक्ष की ओर
2. सरल से कठिन की ओर
3. ज्ञात से अज्ञात की ओर
4. सम्पूर्ण से अंश की ओर
5. विशेष से सामान्य की ओर
6. स्थूल से सूक्ष्म की ओर
7. अनुभव से तर्क की ओर
8. मनोवैज्ञानिकता से तार्किक क्रम की ओर

शिक्षण विधियाँ एवं प्रविधियां

शिक्षक को शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किसी व्यवस्था को अपनाना होता है इस हेतु ऐसी विधियों का चयन किया जाता है जिनका उपयोग शिक्षण कार्य में हो सके।

चाहे व्याख्यान विधि हो अथवा गोष्ठी या प्रायोजना हो, प्रत्येक में विधि के मूल्य के रूप में यह आवश्यक है कि शिक्षक मनोवैज्ञानिकता और तार्किकता का आश्रय ले। विद्यार्थी की जिज्ञासा को पूर्णरूप से उभरने दिया जाय ताकि उसकी समस्या का परिचय मिल सके तत्पश्चात् शिक्षक उपर्युक्त अस्त्रों का प्रयोग कर विद्यार्थी के मस्तिष्क में समाधान प्रविष्टि करे। शिक्षण में विधि का औचित्य इस बात में है कि विद्यार्थी में सृजनात्मक एवं रचनात्मकता के तत्व अकुंरित हो।

शिक्षक–शिक्षार्थी–अभिभावक परिषद्

किसी भी समाज में शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करने वाले तीन मुख्य घटक है।ये सभी शैक्षिक उन्नयन के अधिकांश प्रयास बाल केन्द्रित एवं अध्यापक केन्द्रित रहे है। जहाँ पाठ्यक्रम निर्धारण, शिक्षण विधाओं नवाचारों, आनन्ददायी शिक्षण में बालक को केन्द्र माना है वही शिक्षक को समय–समय पर आयोजित प्रशिक्षणों, कार्यशालाओं के माध्यम से गति प्रदान की जाती है ताकि वह अपनी धार को तेज कर सके। एक ध्रुव, जो इस दिशा में अछूता रहा है, वह है अभिभावक। शायद यही कारण है कि हम शिक्षा के उद्देश्यों को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर पा रहे है। अतः अभिभावक को जोड़ना होगा क्योंकि अभिभावक एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटक है जो कि न केवल नामांकन एवं ठहराव के लक्ष्य की प्राप्ति में उपयोगी भूमिका का निर्वहन कर सकता है वरन् शिक्षा की गुणात्मकता में भी योगदान दे सकता है। यदि हम यह माने कि हम अभिभावक के पूरे सहयोग के बिना शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त कर लेगे तो यह हमारा दिवास्वप्न होगा।

माँ–शिक्षक परिषद्

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में मां की महत्ती भूमिका को मां–शिक्षक परिषद के माध्यम से सृजनात्मक मंच देने का निर्णय किया है। इस बार 18 नवम्बर 2017 को शिक्षक अभिभावक समिति के स्थान पर राज्य में पहली बार मां–शिक्षक परिषद की बैठक बुलाई गई है। छत्रपति शिवाजी की मां जीजा बाई को आदर्श मानकर स्कूलों में मां को परिषद के सभी घटकों से जोड़ने का निर्णय किया है। शिक्षा निदेशक नथमल डिडेल ने बताया कि मां–शिक्षक परिषद की बैठक में मिला अभिभावक मां, दादी, ताई, चाची, बुआ, नानी, मासी, मौसी बैठक में भाग लेगी। इन्हें विद्यार्थी एवं विद्यालय की समग्र गतिविधियों से अवगत करवाया जाएगा।

सर्वेक्षण विधि की आवश्यकता एवं महत्व

इस विधि द्वारा वर्तमान से संबंधित समस्याओं को शोधकर्ता के समक्ष प्रस्तुत हुआ।

सर्वेक्षण विधि की विशेषताएं

1. यह विधि मुख्यतः क्या विधमान है की जानकारी करवाती है एवं इससे अपेक्षाकृत अधिक संख्या में एकत्र किए जाते हैं।
2. यह विधि किसी व्यक्ति विशेष से संबंधित न होकर जनसमूह से संबंधित होती है साथ ही इसका संबंध व्यक्ति की विशेषताओं से न होकर पूर्ण जनसंख्या या उसके न्यादर्श की सामान्यीकृत सांख्यिकी से होता है।
3. वर्तमान से संबंधित इस विधि द्वारा सर्वेक्षण गुणात्मक व संख्यात्मक दोनों ही प्रकार से प्रयुक्त किया जा सकता है तथा इससे स्पष्ट रूप से निश्चित उद्देश्य प्राप्त होते हैं।

सर्वेक्षण विधि के उद्देश्य

1. सूचनाओं का संकलन।
2. किसी विशिष्ट कार्य के अस्तित्व का पता लगाना।
3. किसी व्यवहार या घटना का पूर्वानूमान लगाना।
4. दो चरों के बीच पारस्परिक संबंध का पता लगाना।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक विद्यालयों की सरकारी व गैर सरकारी ग्रामीण व शहरी छात्र व छात्राओं की बुद्धिलब्धि व दुश्चिन्ता का तुलनात्मक अध्ययन।

सारणीयन एवं विश्लेषण

सहशैक्षिक गतिविधि के मध्यमान के सार्थकता स्तर का परीक्षण

सारणी संख्या

क्र.सं.	चर	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर	
						0.05	0.01
1	शहरी विद्यालय	200	88.34	9.30	3.15	✓	✓
2	ग्रामीण विद्यालय	200	85.93	10.07			

डीफ638 टेबल वैल्यू 1.96 – 2.57

आरेख संख्या

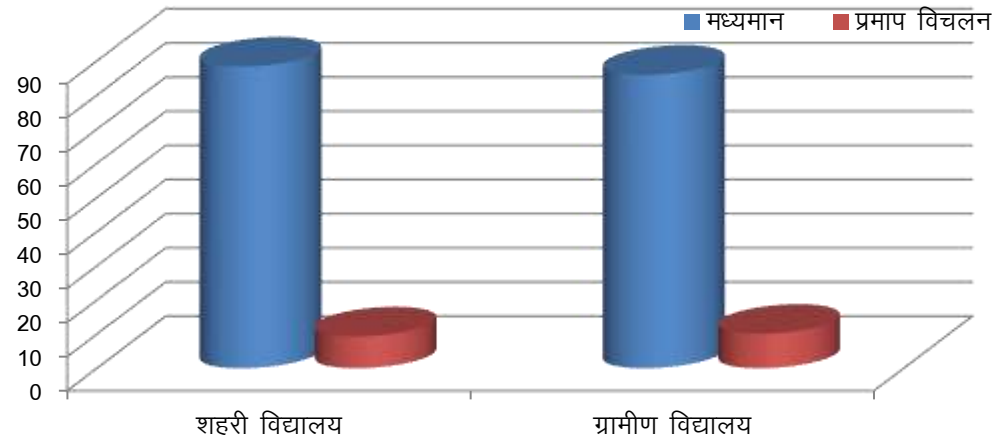

शोध सारांश

विद्यालयों के अकादमिक वातावरण में पाया गया अंतर एवं दिये गये सुझाव

राजस्थान के श्रीगंगानगर संभाग में उच्च माध्यमिक स्तर पर शहरी गैर सरकारी एवं ग्रामीण गैर सरकारी विद्यालयों की सहशैक्षिक गतिविधि में अंतर पाया जाता है। ग्रामीण गैर सरकारी विद्यालयों की सहशैक्षिक

गतिविधि में अपेक्षाकृत न्यून स्थिति पायी गयी।

ग्रामीण गैर सरकारी विद्यालयों के संचालकों, संस्था प्रधानों को चाहिए कि वे शहरी गैर सरकारी विद्यालयों की भांति भौतिक संसाधन विकसित करे ताकि ग्रामीण विद्यार्थियों को भी वे सभी सुविधा मुहैया हो सके जो कि शहरी विद्यार्थियों को उपलब्ध है।

ग्रामीण गैर सरकारी विद्यालय का स्टाफ विषय के अधिक निष्णात एवं योग्य नहीं होने के कारण केवल रटन्त विद्या को प्राथमिकता देता है, विषय को समझने एवं समझाने की स्थिति उनमें न्यून है। संसाधनों का भी अपेक्षाकृत अधिक अभाव पाया गया।

सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों को सरकार द्वारा गैर शैक्षणिक कार्य यथा राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम, जनगणना, पशुगणना, आर्थिक गणना, लोकसभा चुनाव, विधानसभा चुनाव, पंचायत चुनाव, नगरपालिका चुनाव, मतदाता सूची पुनरीक्षण, बी.पी.एल. सर्वे, ग्रामसभा, वार्ड सभा में ड्युटी साक्षरता गणना नामांकन सर्वे, जल अभियान सर्वे आदि करने के कारण शैक्षणिक कार्य पर ध्यान नहीं दिया जाता है जिससे उनका शैक्षिक स्तर निम्न पाया गया।

सरकार को चाहिए कि इस प्रकार के गैर शैक्षणिक कार्य में शिक्षा विभाग के कर्मचारियों को नहीं लगाकर अन्य विभाग के कर्मचारियों को लगाएँ ताकि शैक्षिक स्थिति में सुधार हो सके।

अकादमिक वातावरण में पाया गया अन्य अंतर एवं सुझाव

राजस्थान के श्रीगंगानगर संभाग में उच्च माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के न्यादर्श विद्यालय में किए गए सर्वे के दौरान अकादमिक वातावरण में अन्य अंतर भी दृष्टिगोचर हुए जिनका बिन्दूवार वर्णन, कारण एवं सुझाव इस प्रकार से है –

प्रवेशोत्सव के सन्दर्भ में

शोध के दौरान पाया गया कि सरकारी विद्यालयों में प्रवेशोत्सव मनाने के निर्देश है किन्तु वहां उत्सव जैसा माहौल नहीं है जबकि निजी विद्यालयों में प्रवेशोत्सव का माहौल जन्मोत्सव की तरह मनाया जाता हैं इसका मूल कारण सरकारी विद्यालयों के शिक्षक, नौकरी के मामले में अधिक सुरक्षित एवं निश्चित पाये गये। विद्यालय में विद्यार्थी का प्रवेश हो चाहे नहीं हो, स्थानान्तरण के अलावा उन्हें नौकरी संबंधी कोई भय नहीं होता, दूसरी ओर उन्हें वेतन राजकोष से प्राप्त होता है जबकि निजी विद्यालय का सारा ढांचा विद्यार्थियों से मिलने वाली फीस पर टीका है।

जनसम्पर्क के संबंध में

शोध के दौरान देखा गया कि ऐसे सरकारी विद्यालयों को अंगुलियों पर गिनना भी मुश्किल है जिनका स्टाफ घर–घर जाकर अभिभावकों से सम्पर्क कर विद्यार्थियों को प्रवेश के लिए अभिप्रेरित कर रहे हो जबकि गैर सरकारी विद्यालयों का स्टाफ घर–घर सम्पर्क करता है और अभिभावकों को अपनी स्कूल में प्रवेश दिलाने हेतु अभिप्रेरित करता है। अतः सरकारी विद्यालय के शिक्षकों को चाहिए कि वे इस कार्य के प्रति अनदेखी नहीं करे।

प्रचार सामग्री के क्रम में

शोध के दौरान पाया गया कि सरकारी विद्यालयों का स्टाफ स्कूल प्रवेश संबंधी कोई पेम्पलेट वितरित नहीं करता और न ही गत वर्ष के परीक्षा परिणाम एवं अन्य उपलब्धियां बताकर अभिभावकों को प्रेरित करता है। निजी विद्यालयों के शिक्षक मजबूरी में ही सही विद्यालय के पेम्पलेट वितरित करता है, अपने गत वर्ष के परीक्षा परिणाम एवं अन्य उपलब्धियाँ बताकर अभिभावकों को प्रेरित करता है। अतः सरकारी शिक्षकों को भी अपने विद्यालय का प्रचार करना चाहिए।

शिक्षकों हेतु सुझाव

1. शिक्षार्थी को शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन देनाशिक्षको को चाहिए कि वे अपने विद्यार्थियों को समय–समय पर शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन देते रहे जिससे शिक्षार्थी सीनियर सैकण्डरी परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त ही अपने लक्ष्य की प्राप्ति की तैयारी में लग सके और अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सके।

2. शिक्षार्थी की व्यक्तिगत भिन्नता की जानकारी रखनाअध्यापकों को चाहिए कि वे अपने विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यक्तिगत भिन्नता की जानकारी रखकर उपयुक्त सुझाव देते हुए अध्ययन–अध्यापन कार्य करे।

3. शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग अधिकाधिक करना शिक्षण को प्रभावशाली, गतिशील एवं सुदृढ़ बनाने हेतु शिक्षकों को चाहिए कि वे शिक्षण कार्य में अधिकाधिक शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करें।

4. सहशैक्षिक क्रियाकलापों में रूचि लेना अध्यापकों को चाहिए कि शैक्षिक कार्यो के साथ–साथ सहशैक्षिक गतिविधियों में भी भावना से जुड़कर कार्य करे ताकि शिक्षार्थी का चहुमुखी विकास हो सके।

5. शिक्षा में नवाचार अपनाना शिक्षकों को चाहिए कि वे परम्परागत तकनीक को छोड़कर शिक्षा में नवाचार को अपनाएं। इस हेतु विद्यालय में दल शिक्षण, अभिक्रमित अनुदेशन, समस्या समाधान विधि आदि का

प्रयोग कर शिक्षण को प्रभावशाली बनाएं।

अभिभावकों हेतु सुझाव

1. शैक्षिक प्रगति पर दृष्टि रखनाअभिभावकों को अपने बच्चों को विद्यालय में प्रवेश दिलाकर अपने दायित्व की इतिश्री नहीं कर लेनी चाहिए वरन् उनकी शैक्षिक प्रगति पर दृष्टि रखनी चाहिए।

2. उचित विद्यालय का चयन करना अभिभावकों को ऐसे विद्यालय में अपने बच्चों को प्रवेश दिलाना चाहिए जो शैक्षिक के साथ–साथ सहशैक्षिक कार्य भी करवाता हो।

3. विद्यालय एवं विद्यार्थी पर नजर रखना अभिभावकों को ऐसे विद्यालयों से बचना चाहिए जो फीस के नाम पर लूट–खसोट करता हो। अपने बच्चों पर भी नजर रखनी चाहिए कि वे नियमित विद्यालय जा रहे है एवं उनकी शैक्षिक एवं सहशैक्षिक स्थिति किस प्रकार चल रही है?

4. दाखिला दिलवाते समय सावधानी बरतना अभिभावक विद्यालयों की चकाचौंध के आधार पर अपने बच्चों को दाखिला नहीं दिलवाए वरन् शैक्षिक एव सहशैक्षिक गुणवत्ता से ओतप्रोत विद्यालयों का चयन अपने बच्चों के लिए करे।

भावी शोध हेतु सुझाव

समय अभाव के कारण शोधकर्ता ने अपने अध्ययन का क्षेत्र उच्च माध्यमिक स्तर तक तथा अकादमिक वातावरण में शैक्षिक, सहशैक्षिक एवं भौतिक स्थिति के स्तर पर सीमित रखकर ही अध्ययन किया है लेकिन इसमें निम्नलिखित बिन्दुओं को और जोड़ा जा सकता है जिससे की परिणाम अत्यधिक स्पष्ट एवं विस्तृत प्राप्त हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. नवीन कुमार (2013), सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय, झुंझुनू (राज.) प्रकाशित शोध प्रबंध, छवि नेशनल जर्नल ऑफ हायर एज्युकेशन, वर्ष –दो, निर्गमन–दो, जनवरी से मार्च 2017, पेज 22–24
2. आर. के सांडिल्य (2008) राजस्थान के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के अकादमिक वातवरण का अध्ययन। महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.), प्रकाशित शोध प्रबंध, नया शिक्षक, वर्ष–56, अंक–1, जनवरी–मार्च 2014, शिक्षा निदेशालय, राजस्थान सरकार, श्रीगंगानगर
3. रिचर्ड, (2010). बच्चों के अकादमिक और सामाजिक कार्यो का अध्ययन शिक्षक महाविद्यालय अभिलेख 40 (5) सि. 2004 पेज 516–664.
4. आलोक (2006). सहारा समय. वर्गों में बटी शिक्षा. प्राईमरी शिक्षक. नई दिल्ली : नेशनल काउसिल ऑफ एज्युकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग. पृ. 41.
5. राय, एस. (2006).स्वतन्त्रता विशेषांक. आधुनिक भारतीय शिक्षक. नई दिल्ली : नेशनल काउसिल ऑफ एज्युकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिग. पृ. 41.
6. मल्होत्रा सी. के. (2009), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा शिक्षक शिक्षा, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली
7. बोहरा, लक्ष्मीधर (2006) प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में विचार करने की योग्यता (विचारशक्ति) को बढ़ानाः पर्यावरणीय अध्ययन एक मार्ग के रूप में. प्राथमिक शिक्षक वोल्यूम ग ग टप (3) 25–3.
8. डी, कोर. (2016). जम्मू डीविजन के विद्यार्थियों के व्यावसायिक एवं शैक्षिक आकांक्षाओं का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध. जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू.
9. डगलस, डी. रेडडी. (2006). शैक्षिक एवं विद्यालयी संरचना का अध्ययन. शिक्षक –महाविद्यालय अभिलेख 106 (20) अक्टूबर 2004 पेज 2019–2014.
10. रिचर्ड, (2010). बच्चों के अकादमिक और सामाजिक कार्यो का अध्ययन शिक्षक महाविद्यालय अभिलेख 40 (5) सि. 2004 पेज 516–664.